ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्रशांत कुमार

शोध छात्र, समाजशास्त्र विभाग, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, भारत.

How to Cite the Article: प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i8.2026.109-114

Keywords	*Abstract*
विभाजन, भारतीय समाज, विस्थापन, स्वतंत्रता, ब्रिटिश प्रभुता, शरणार्थी ।	यह लेख ब्रिटिश साम्राज्यवाद से आजादी के एक सफल कार्य के बजाय हिंसक विभाजन के संदर्भ में भारतीय समाज पर क्या असर पड़ा इसका विश्लेषण करता है। ब्रिटिश भारत के दो संप्रभु राज्यों, भारत और पाकिस्तान (जिसके पश्चिमी और पूर्वी भाग थे), में बँटवारे से कई आकस्मिक परिवर्तन आये। लाखो जानें गई, कइयों की जिंदगियां पलक झपकते बदल गई, शहर बदले, भारत बदला, एक नए देश का उदय हुआ, और ऐसा जनसंहार, हिंसा एवं विस्थापन हुआ जिसका इतिहास में पहले कोई उदाहरण न था। भारत का विभाजन विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक कारकों का परिणाम था। भारत को स्वतंत्रता देने का ब्रिटिश सरकार का निर्णय बढ़ते राष्ट्रवादी आंदोलन और भारतीय लोगों की स्व-शासन की इच्छा से प्रभावित था। हालांकि विभाजन मुख्य रूप से हिन्दू और मुस्लिम समुदायों के बीच धार्मिक तनावों का परिणाम था।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

प्रस्तावना :

भारतीयों को अंग्रेजों के चंगुल से 1947 में मुक्ति मिल गई थी। इसके लिए न जाने कितने स्वतंत्रता सेनानियों को अपनी जान की बाजी भी लगानी पड़ी। उसी समय एक कष्टकारी घटना विभाजन की घटी, जिसमें भारत और पाकिस्तान दो अलग-अलग राष्ट्रों का निर्माण हुआ था। इस विभाजन से लाखों लोगों की जाने चली गई, कई लोग प्रवासी हो गए, कितने लोग तो अपनों से बिछड भी गए। जानकार विद्वानों के अनुमानों में भी मरने वालों की संख्या 2 लाख से 5 लाख तक रही है। लगभग डेढ़ करोड़ लोगों को भारत और पाकिस्तान के बीच रातों-रात खड़ी कर दी गई सरहद के इस या उस पार जाना पड़ा। जैसे ही लोगों ने "छाया सीमा" से ठोकर खाई, वे बेघर हो गए। लोगों द्वारा अपने सरजमीं पर बिताए पल उनसे छीन लीं गई। रिश्तेदारों से बिछड़ना, अपनी जमीन को खोना शरणार्थियों के लिए कष्टकारी हो गया । लोग अपनी क्षेत्रीय संस्कृति के रीति-रिवाजों को छोड़कर दूसरे अजनबी मजहब को अपनाने पर मजबूर हुए। विभाजन के दौरान हत्याएँ, लूट, बलात्कार की भी घटनाएँ घटी। कहीं न कहीं इसके जिम्मेदार भारत में पाकिस्तान से नफरत करने वाले और पाकिस्तान में भारत से नफरत करने वाले दोनों ही बंटवारे की ऊपज है।

साहित्य समीक्षा :

- पल्लवी राघवन ने अपनी पुस्तक 'एनिमोसिटी एट बे एन अल्टरनेटिव हिस्ट्री ऑफ दि दंडिया-पाकिस्तान रिलेशनशिप 1947-1952' में बताया कि बटवारे से जन्म लेने वाली समस्याएं जैसे विस्थापन या अल्पसंख्यकों के अधिकार, इन सबका हल तलाश करने के लिए दोनों देशों के बीच एक अजीब निकटता देखी गई।[1]
- मंजीत सचदेवा का उपन्यास लॉस्ट जेनेरेशन (2013) मार्च 1947 में रावलपिंडी में ग्रामीण इलाकों में मुस्लिम लीग द्वारा किए गए नरसिंहार का वर्णन करता है।[2]
- खान यास्मीन की पुस्तक द ग्रेट पार्टिशन द मेकिंग ऑफ इंडिया एंड पाकिस्तान में बताया कि दक्षिण एशियाई लोगों को पता चला कि ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य का विभाजन 3 जून 1947 को होगा।[3]
- प्रिंतिका चौधरी द्वारा 'विभाजन विरोधी हमारक परियोजना' में दर्शाया गया है कि यह विरोधी स्मारकों की एक स्मारक श्रृंखला या संग्रह है जो भारत के विभाजन की विभिन्न प्रति-स्मृतियों का उत्खनन करता है।[4]

उद्देश्य :

इस लेख के माध्यम से यह समझने की कोशिश रहेगी कि विभाजन का भारतीय समाज पर क्या प्रभाव पड़ा ।

शोध पद्धति :

शोधकर्ता ने विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव के अध्ययन हेतु विश्लेषणात्मक, गुणात्मक एवं द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया है। जिसमें आलोचित विषय पर विभिन्न महत्वपूर्ण पुस्तकें, आलेख, पुस्तकालय, संबंधित शोध और इंटरनेट आदि का प्रयोग किया गया है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : -

भारत के विभाजन ने भारत और पाकिस्तान दोनों को तबाह कर दिया। विभाजन की प्रक्रिया ने दंगों, बलात्कारों, हत्याओ और लूटपाट में कई लोगों की जान ले ली। विशेषकर महिलाओं को हिन्दुओं और मुसलमानों द्वारा सत्ता के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। कमला भसीन और रितु मेनन ने अपनी पुस्तक 'वॉर्डर्स एंड बाउंड्रीजः वीमेन इन इंडियाज पार्टीशन' में खुलासा किया है कि पाकिस्तान जाते समय 50 हजार महिलाओं का अपहरण किया गया जबकि 33000 हजार महिलाओं का अपहरण तब किया गया जब वे भारत का पलायन करने का प्रयास कर रही थी। उर्वशी बुटालिया ने अपनी पुस्तक 'द अदर साइड ऑफ साइलेंस' में दावा किया कि सीमा के दोनों ओर से 75000 महिलाओं का अपहरण कर लिया गया था।[6] हालांकि, यह माना जाता है कि वास्तविक संख्याएं भिन्न हो सकती है क्योंकि समय की उथल-पुथल के कारण कई घटनाओं पर. ध्यान नहीं दिया गया और दर्ज नहीं किया गया। महिलाओं के खिलाफ हिंसा यहीं खत्म नहीं हुई। जिशा मेनन ने अपनी पुस्तक 'द परफॉर्मेंस ऑफ नेशनलिज्म इंडिया, पाकिस्तान एण्ड द मेमोरी ऑफ पार्टीशन' में बताया कि महिलाओं के स्तनों को दाग दिया गया था, और उनके शरीर और जननांगों पर विजयी नारे या धार्मिक प्रतीकों का टैटू गुदवाया गया था।[7]

पंद्रह मिलियन शरणार्थी सीमा पार कर उन क्षेत्रों में चले गए जो उनके लिए पूरी तरह से विदेशी थे क्योंकि उनकी पहचान उनके पूर्वजों के भौगोलिक घर में निहित थी, न कि केवल उनकी धार्मिक संबद्धता में। भारत के विभाजन के अलावा पंजाब और बंगाल प्रांतों को विभाजित किया गया जिससे विनाशकारी दंगे हुए और हिंदुओं, मुसलमानों और सिखो की जान चली गई।[8]

विभाजन के काल में पितृसत्तात्मक समाज में अपनी इज्जत जमीन के मालिकाने से तय होती थी। पुरुषों को लगता था कि उनकी जमीन को शत्रुओं द्वारा हथियाने के लिए उनके बीवी, बेटी-बहन को शत्रु नापाक कर सकता है तो वे औरतो को ही मार डालते थे।[9]

उर्वरशी बुटालिया ने अपनी पुस्तक दि अदर साइड आफ साइलेंस में रावलपिंडी जिले के थुआ खालसा गांव के एक ऐसे ही दर्दनाक हादसे का जिक्र किया है। बताते है कि तक्सीम के समय सिखों के इस गांव की 90 औरतों ने "दुश्मनों" के हाथों में पड़ने के बजाय अपनी मर्जी से कुएं में कूदकर अपनी जान दे दी थीं।[10]

इस विभाजन का परिणाम यह रहा कि लोगों को पुर्नवास करने में भी भारी रिक्कतों का सामना करना पड़ा। दोनों देशों के करोड़ों लोग पुर्नवास की आश लगाये हुए थे। परन्तु इतने लोगों का एक साथ पुर्नवास कठिन कार्य था। इस समस्या ने देश की खाधान व्यवस्था, आवास व्यवस्था, प्रशासनिक व्यवस्था आदि को असमर्थ व असहाय कर दिया था। व्यवस्था को संतुलित करने के लिए लार्ड माउण्टबेटन के नेतृत्व में एक 'आपात समिति' का निर्माण किया गया था। जो लोगों को काफी मदद की।[11]

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में, लगभग एक सहस्राब्दी तक सह अस्तित्व में रहने वाले समुदायों ने सांप्रदायिक हिंसा के भयानक प्रकोप में एक-दूसरे पर हमला किया, जिसमें एक तरफ हिंदू और सिख, वहीं दूसरी तरफ मुस्लिम थे ।

विभाजन का एक और अप्रत्याशित परिणाम यह हुआ कि पाकिस्तान की जनसंख्या मूल अनुमान से अधिक धार्मिक रुप से सजातीय हो गई । मुस्लिम लीग के नेताओं ने मान लिया था कि पाकिस्तान में एक बड़ी संख्या में गैर-मुस्लिम आबादी होगी, जिनकी उपस्थिति भारत में शेष मुसलमानों की स्थिति को सुरक्षित रखेगी, लेकिन पश्चिमी पाकिस्तान में, 1951 तक गैर-मुस्लिम अल्पसंख्यकों की आबादी केवल 1.6% थीं, जबकि पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में यह 22% थी । जनवरी 1948 में एक हिन्दू राष्ट्रवादी चरमपंथी ने गांधी की हत्या कर दी, जिसने उन पर विभाजन के समय मुसलमानों का बहुत अधिक समर्थन करने का आरोप लगाया था ।

आज भारत और पाकिस्तान दोनों ही विभाजन के अपराधों की यादों के इर्द-गिर्द रची गई कहानियों से पंगु बने हुए हैं, क्योंकि राजनेता (विशेषकर भारत में) और सेना (विशेषकर पाकिस्तान में) अपने स्वार्थो के लिए 1947 की नफरत को बढ़ावा दे रहे है । निसिद हजारी ने अपनी पुस्तक 'आधी रात का रोष : भारत विभाजन की घातक विरासत" में यह बताते हुए समाप्त की है कि भारत और पाकिस्तान के बीच प्रतिद्वंदिता कम होने के बजाय अधिक खतरनाक होती जा रही है । दोनों देशों के परमाणु शस्त्रगार बढ़ रहे है, आतंकवादी समूह अधिक सक्षम हो रहे है और दोनों पक्षों के कट्टरपंथी मीडिया आउटलेट सक्रिय हो रहे है । उदारवादी आवाजों के लिए दायरा सिकुड़ रहा है ।[12]

विभाजन के कारण शरणार्थियों की सम्पत्तियों की समस्या देखने को मिली । इसके लिए 1956 में दोनों देशों ने आपसी सहमति से शरणार्थियों के बैंक खातो, लाकरों एवं स्थिर जमा को हस्तांतरित करने पर सहमति प्रकट की । सन् 1950 में नेहरू-लियाकत समझौता शरणार्थियों की सम्पत्तियों को वापिस या हस्तान्तरित करने के लिए हुआ ।

भारतीय रियासतों पर ब्रिटिश सम्प्रभुता की समाप्ति के बाद उनके भविष्य को लेकर अनिश्चितता का वातावरण बन गया । सरदार पटेल ने 1947 में कश्मीर के महाराजा हरि सिंह को भारत में विलय के लिए राजी कर लिया । 15 अगस्त 1947 तक कश्मीर, जूनागढ़ और हैदराबाद छोड़कर भारत की सभी रियासतों में उसके साथ विलय के समझौते पर हस्ताक्षर कर दिए ।[13]

निष्कर्ष :

भारत के विभाजन का भारतीय समाज, राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर दूरगामी प्रभाव पड़ा था । दो समुदायों के वैचारिक वैमनष्य के कारण विभाजन का परिणाम देखने को मिला । कहा जाता है विभाजन किसी देश की भूमि का नहीं, बल्कि वहां रहने वाले समस्त नागरिकों की भावनाओं का भी होता है । दोनों देश शत्रुता के आगे अपने परमाणु हथियारों की भंडारण क्षमता पर जोर दे रहे हैं । बार्डरों की सीमाओं पर आतंकवादी गतिविधियाँ चरम पर हैं । कुछ लोगों की व्यक्तिगत आकांक्षाओं के चलते निर्दोष लोगों को जान से हाथ धोना पड़ता है । हमें चाहिए कि दोनों देशों को आपसी

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

सौहार्द बनाकर प्रेमपूर्वक रहना चाहिए। देखा जाय तो जितना नुकसान विश्व को प्राकृतिक आपदाओं से नहीं हुआ है उससे कहीं ज्यादा नुकसान विचारधाराओं के टकराव से हुआ है।

AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

संदर्भ ग्रन्थ : (REFERENCES)

1. https://www.bbc.com/hindi/india-62458110

2. एक्सलिब्रिस कॉरपोरेशन एलएलसी, 2013

3. https://doi.org/10.2307/J.ctv1bzfp 93

4. https://www.pritikachoudhry.com/partition-india-art

5. Borders and Boundaries: Women in India Partition: BY Ritu Menon & Kamala Bhasin, New Brunswick, N.J. Rutgers University press, 1998 xii, 274 PP

6. The Other Side of Silence: Voice from the Partition of India-Urvassi Butalia-Penguin Books India, 1998, PP-3

7. https://thewire.in/history/gendereed-vailence-and-the-horrors -of- partition-the-price-paid-by-women (लैंगिक हिंसा और विभाजन की भयावहता महिलाओं द्वारा चुकाई गई कीमत-फैसल फरीद और शाह आलम)

8 https://Schalarblogs.emory.edu/post colomial studies/2014/06/21/partition-of-India/

9. https://ncert.nic.in/text book/pdf/Ihhs 305.pdf (भारतीय इतिहास के कुछ विषय भाग-3, विभाजन को समझना, PP 396)

10.https://www.dukeupress.edu/the-other-side-of-silence.

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License

प्रशांत कुमार (2026). विभाजन का भारतीय समाज पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(8),109-114.

11.https://the conversation.com/how-the-partition-of-India-happened-and-why-its-effects-are still-felt-today-81766

12.https://www.newyorker.com/magzine/2015/06/29/the /great-divid-books-dalrymple.

13.https://uou.ac.in/site/default/files/slm/MAHI-103.pdf

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercia 4.0 International License